फ़िल्म : ज़ंजीर (1973) **परदे पर** : अमिताभ बच्चन (इंस्पेक्टर) और प्राण (शेर खां)

http://www.youtube.com/embed/_Fj_myBflrY (de 0 :19 à 1 :33)

शेर खान : असलामालेकुम, इंस्पेक्टर। हमारा (sic) खुशकिस्मती कि तुमारे जैसे बड़े आफ़िसर ने हमको याद किया। हमारे लायक कोई खिदमत ?

इंस्पेक्टर : तुम्हारा नाम शेर खान है ?

शेर खान : इस इलाके में नए आए हो साहब, वरना शेर खां को कौन नहीं जानता। खैर अब मुलाकात हो गई…

इंस्पेक्टर : जब तक बैठने को न कहा जाए, शराफ़त से खड़े रहो। यह पुलिस स्टेशन है, तुम्हारे बाप का घर नहीं।

शेर खान : साहब, आज तक शेर खां से किसी ने इतने बड़ी बात नहीं की। यह तुम नहीं, तुम्हारी वर्दी, तुम्हारी कुर्सी बोल रही है। जिस दिन यह वर्दी यह कुर्सी नहीं होगी, उस दिन तुम…

इंस्पेक्टर : Shut up you bloody…

शेर खान : चिल्लाओ नहीं साहब, गला खराब हो जाएगा। घंटी बजाओ और हवलदार को बुलाओ और कहो कि शेर खान को बंद कर दे।

हवलदार: साहब, यह फ़ाइल।

इंस्पेक्टर : हवलदार, शेर खान को बाहर छोड़ दो।

शेर खान: ज़रूरत नहीं। शेर खान खुद आया था, खुद चला जाएगा। खुदा हाफ़िज़।